उपसंहार

उपसंहार

नासिरा शर्मा के संपूर्ण कथा–साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् उनके जीवन और साहित्य से सम्बन्धित कई घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। नासिरा शर्मा संभवतः पहली ऐसी बौद्धिक हिंदी लेखिका हैं, जो रचना के साथ विचार के स्तर पर भी काफी सक्रिय है। इसका भारतीय ही नहीं, बल्कि दूसरे एशियाई मुल्कों खासकर मुस्लिम देशों की संस्कृति, समाज और राजनीति पर गहरी पकड़ है, उन्हें इन विषयों का विशेषज्ञ भी माना जाता है। इन देशों के साहित्य, राजनीति, परिवेश और बौद्धिक हलचलों पर उन्होंने पर्याप्त विमर्श और नियमित लेखन किया है।

नासिरा शर्मा अद्‌भुत व्यक्तित्व एवं बहुआयामी कृतित्व की धनी हैं। वे एक मुस्लिम शिया परिवार में जन्मी उनके पिता शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित थे तथा साहित्यिक वातावरण उन्हें विरासत में मिला। बचपन से ही उन्हें साहित्य में रुचि थी। अपने परिवार के रुतबे की वजह से उन्हें जो स्पेशल अटेंशन दी जाती, वो उन्हें पसंद नहीं थी। वह स्वयं अपनी पहचान बनाना चाहती थीं। मुस्लिम परिवार में होते हुए हिंदू ब्राह्मण प्रो0 रामचंद्र शर्मा से विवाह किया और नासिरा अली से नासिरा शर्मा बन गयीं। सुदृढ़ साहित्यिक पृष्ठभूमि वाले नगर इलाहाबाद से आयीं नासिरा शर्मा ने यों तो फारसी भाषा साहित्य में परास्नातक (एम0ए0) किया है, हिंदू, उर्दू, अंग्रेजी और पश्तो भाषा वे बखूबी जानती हैं। पड़ोसी देशों का अध्ययन उनका पसंदीदा विषय रहा है। विशेषतः ईरानी, समाज, साहित्य, राजनीति कला एवं संस्कृति पर उनकी पकड़ बहुत गहरी है। ईरान के साथ–साथ ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, फिलीस्तीन, इजरायल, युगाण्डा, इत्यादि देशों में हो रही विभिन्न अमानवीय घटनाओं का वर्णन भी अपने साहित्य में किया है। इन्होंने बड़े ही परिश्रम और लगन से अलग–अलग देशों के संस्कृति और साहित्य का अध्ययन किया और फिर अपने कथा का विषय बनाया। कथालेखन में तो इन्हें महारथ हासिल है। साथ ही साथ संपादन और पत्रकारिता का कार्य भी करती है। अनुवाद

के क्षेत्र में भी उनका विशेष कार्य है।

नासिरा शर्मा की सोच पूरे भारतवर्ष पर लागू होती है। वह संपूर्णतया में, वैविध्य में जीने की चाह रखती हैं। वह एक ऐसे समाज की कल्पना करती हैं, जिसमें मानवता पूर्ण स्वतन्त्रता, आकांक्षा के साथ जी सके। वह भारत, जिसमें भाषाओं का, धर्म का, सांस्कृतिक गतिविधियों का, राजनीति, वर्ण और ऋतुओं का वैविध्य एवं अनेकता है, उसमें रहने वाला मानव उतना ही संकीर्ण भयाक्रान्त है। यदि इससे वह मुक्त हो सके, मानवतावादी दृष्टि अपनाये तो एक बेहतर समाज का बेहतर जीवन पाने में कामयाब हो सकेगा।

नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य वर्तमान एवं गतिशील जीवन का लेखा–जोखा है। इनकी कहानियाँ और उपन्यास दोनों ही देश–विदेश की विषयवस्तु को समेटे हुए हैं। इन्होंने मानवीय संघर्ष, मनुष्यता की पीड़ा, मानवाधिकार, इत्यादि को अपनी संवेदनशील दृष्टि द्वारा चित्रित किया है। अपने समय के प्रति लगातार सोचना तथा उसके प्रति एक सजग लेखिका के तौर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने का बौद्धिक अंदाज नासिरा शर्मा के लेखन का केन्द्रीय पक्ष है। उन्होंने देखे, भोगे तथ्यों को व्यवस्थित करके उसे विविध परिदृश्यों, घटनाओं, जीवन स्थितियों तथा चरित्रों द्वारा प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि इनके लेखन का पैटर्न दूसरों से भिन्न है और हिंदी कथा–साहित्य में जिसकी एक अलग पहचान है।

नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य स्व की आकांक्षा और स्वतंत्र चुनाव का खतरा उठाकर समकालीन समय संदर्भों को बेनकाब करने का सशक्त आईना है। यह साहित्य अपने वैविध्य में सुलगते सवाल लिए है। वे सवाल जो परिवर्तन के स्वीकार से उपजते हैं और अन्तर्विरोधों में अपने वजूद को ढूँढ़ते हैं, इसीलिए वहाँ देश और काल अपनी प्राणवत्ता के साथ धड़कते हैं। परंपराओं और परिवर्तनों से रगड़ खाते हुए उनका साहित्य मानव मन के सत्य का अन्वेषण है। उपन्यास, कहानी, चिंतन–मंथन, शोध, सर्वेक्षण वगैरह जो भी विधा हो एक बगावती तेवर, एक आक्रोश और एक जिद जैसे अर्न्तवर्ती आँच की तरह पाठक को लगातार तपिश देती है। नासिरा शर्मा की रचनाओं का कैनवास बहुत बड़ा है। वे महिला होने के नाते, केवल स्त्री–विमर्श की परिधि में नहीं बँधी है, बल्कि संकीर्ण गलियारों से निकलकर विश्वजनीन समस्याओं के चेहरे पढ़ती है। एक खोजी पत्रकार न केवल

साम्राज्यवादी तेवर, पूँजीवादी व्यवस्था की साजिशों और औद्योगिक दौड़ में शामिल देशों की नब्ज पर हाथ रखती है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक खोखलेपन की जड़ों पर भी प्रहार करती है। समाज के हर वर्ग के प्रति गहरी और सूक्ष्म संवेदना और आमजन के सुख–दुःख से जुड़ी उनकी कलम साहित्यिक प्रतिबद्धता के रूप में अपना दायित्व निभाती है। हिंदू–मुस्लिम परिवेश और संस्कृति जैसे नाजुक क्षेत्रों से निकलकर वे व्यक्तिगत और उसके अधिकारों के प्रति भी सचेत हैं, साथ ही अपने इलाहाबाद, दिल्ली से निकलकर वे ईरान, इराक, अफगानिस्तान, दुबई और अन्य मुस्लिम देशों की अन्तर्वर्ती स्थितियों को भी खंगालती है।

नासिरा शर्मा के लेखन की एक खासियत है कि वो कभी भी किसी मुद्दे की तह में जाये बगैर अपनी कलम नहीं चलाती हैं। इसके लिए चाहे उन्हें कितनी ही मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े। इराक और ईरान की यात्राओं पर लिखी गई तमाम किताबों, कहानी और उपन्यासों को निःसंदेह पाठक नहीं भूले होंगे। जहाँ बम और धमाकों के बीच हालात का जायजा लेने के लिए वो वहाँ तक जाती हैं जहाँ किसी भी आम इंसान की नैसर्गिक सीमाएँ जवाब दे जाती हैं।

नासिरा शर्मा चार बार ईरान और छः बार इराक हो आयी हैं। उन्होंने आम जनता के साथ रहकर उनके सुख–दुःखों में शामिल होकर अपनी अनुभूति के आधार पर साहित्य का सृजन किया है। ईरान की क्रांति का बहुत बुरा असर ईरानी जनता पर हुआ। ईरान–इराक युद्ध नासिरा शर्मा के अनुसार'एक बेहूदा साजिश थी, जो विश्व स्तर पर (मध्यपूर्व) के दो प्रगतिशील विचार वाले देशों को तबाह करने के लिए (अमेरिका द्वारा) रची गई थी।' हकीकत को पूरी तरह समझने और दुनिया के सामने रखने के लिए बार–बार इराक ही नहीं गईं, बल्कि पेरिस, लंदन और जर्मनी तक हो आईं। नासिरा उस घोर आतंक भरे माहौल में भी ईरानी सत्ता से जुड़ी हुई बड़ी हस्तियों के साक्षात्कार लेने में सफल हुईं। वे उस समय की ऐसी सर्वोच्च हस्ती से रूबरू होने में कामयाब हो गईं जिसने विश्व के किसी भी पत्रकार को पास भटकने तक नहीं दिया था, वह हस्ती खुद खुमैनी थे।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य में अतीत का गौरव है, वर्तमान का सही मार्गदर्शन और भविष्य को उज्ज्वल और संपन्न बनाने की चेष्टा भी है। वह उन रचनाकारों में से हैं, जो अपने दायित्व को जानते और मानते हैं। सस्ती लोकप्रियता

के लिए उन्होंने कभी अपनी शालीनता एवं ईमानदारी पर आँच नहीं आने दी है, न ही घटिया समझौता किया है। वे कर्त्तव्य के प्रति सजग और लेखनी के प्रति वफादार रही हैं। उन्होंने साहित्यिक यात्रा में कहानी, उपन्यास, अनुवाद, समीक्षा, वैचारिक लेख आदि में सफल लेखन किया है। उनका साहित्य अनुभूति से ओत–प्रोत होने के कारण उसमें सरसता है। सकारात्मक दृष्टिकोण काम के प्रति निष्ठा और ईमानदारी आदि से उन्होंने अपनी साहित्य साधना में सफलता पाई है।

नासिरा शर्मा ने हिंदी कथा–साहित्य के क्षेत्र में'बुतखाना' कहानी से प्रवेश किया।'बुतखाना' कहानी बहुत सराही गई और उसके बाद उनके कई कथा–संग्रह और उपन्यास आये, जिनमें स्त्री–विमर्श से लेकर देश–विदेश की विभिन्न समस्याओं पर विचार हुआ। नासिरा शर्मा आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में एक प्रखर लेखिका के रूप में समक्ष हमारे आयीं। इनकी कहानियों में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना के नये आयाम प्रस्तुत करती है। इनके कथा–साहित्य में वैविध्य है। इनके गद्य की गंभीरता, संवेदना के धरातल पर समाज को प्रिय और एकता का संदेश देती है। उनके कई उपन्यास नारी प्रधान हैं।

इनके उपन्यासों में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों, पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की दशा–दुर्दशा, स्त्री–विमर्श का ईमानदारीपूर्वक किया गया चित्रण है। उपन्यासों में विद्रोह की एक परंपरा भी विकसित होती है, जिसका उद्‌देश्य है एक व्यवस्था की स्थापना, जो पूर्ण रूप से पुरुष प्रधान न हो। स्त्री–पुरुष की समान भागीदारी हो। किसी का किसी पर वर्चस्व न हो। आजादी की सुबह हो समाज में और इस सुबह की लालिमा से ओतप्रोत हो। हमारा समाज तथा प्रकृति प्रदत्त इंसानियत की खुशबू से सुभाषित हो सकेगा। इस उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु नासिरा शर्मा का उपन्यास साहित्य महिलाओं में नई शक्ति, ललक और हिम्मत भरने की क्षमता भी रखता है।

नासिरा शर्मा अपने उपन्यासों द्वारा जीवन की गहन त्रासदी का सूक्ष्मता से वर्णन करती हैं। असमानता, अराजकता और शोषण आज इंसानी रिश्तों को कमजोर बना रहे हैं। नासिरा शर्मा का अदम्य विश्वास है कि यदि व्यक्ति मानवीय संवेदना को जीवित रखें, तो वह हर परिस्थिति में विजय प्राप्त कर सकता है। इंसान सिर्फ व्यक्तिगत दुःखों में ना उलझकर संपूर्ण संसार के दुःखों का अनुभव करे और लेखक की लेखनी में इतनी ताकत हो कि वह हर किसी का दुःख उतनी ही गहराई से

व्यक्त कर सके।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा साहित्य के धरातल पर उपयुक्त सिद्ध हुई है। इन्होंने उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, हिंदी सभी भाषाओं का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया हुआ है। कहीं–कहीं पर काव्यात्मक भाषा, क्षेत्रीय भाषा भी देखने को मिलती है। इनके उपन्यासों की भाषा इतनी रोचक एवं सरल है कि बार–बार पढ़ने के बाद भी जी नहीं भरता। इन्होंने मुस्लिम, ईरानी परिवेश का जो चित्र हमारे सामने उकेरा है, वह पाठक के लिए बिल्कुल नया और अविश्वसनीय है। मुस्लिम शिया परिवार से होते हुए हिंदू बाह्मण से विवाह कर और एक सफल सुखद वैवाहिक जीवन निर्वाह कर हमारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं, नासिरा शर्मा। मुस्लिम समाज के प्रति जिन लोगों ने अपनी सोच का दायरा तंग कर रखा था, वो लोग इनके उपन्यासों को पढ़कर मुसलमानों के प्रति अपनी सोच जरूर बदलेंगे। नासिरा के उपन्यासों को पढ़कर यह अहसास हुए बिना नहीं रहता कि उनका मुस्लिम जीवन के, विशेषकर मुस्लिम नारियों के जीवन के यथार्थ का प्रामाणिक अनुभव है। सचमुच नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नयापन और मुस्लिम परिवेश से जुड़ी नारी–संवेदना की ताजगी है। नासिरा शर्मा के उपन्यास लेखन में शब्दों का उपन्यास नहीं होता है। वाक्यों की बनावट और बुनावट उनकी अपनी है। शब्द प्रयोगों की चतुरता से उनकी भाषा जानदार, शानदार और धारदार बन गई है। यह विशिष्टता उन्हें अपने समकालीनों से अलग करती है। इनके उपन्यासों में एक ओर तो इन्द्रधनुषी रंगत है, दूसरी ओर पाठकों के मन को अपनी ओर खींचने की ऊर्जा है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों के स्त्री–पात्र अपनी विपरीत परिस्थितियों से जूझकर अपना लक्ष्य स्वयं अर्जित करना चाहते हैं। उनके ये पात्र शिक्षित और अशिक्षित दोनों परिवेश से हैं। नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यासों की रचनाओं में अलग–अलग भावबोधों का प्रयोग किया है।'शाल्मली' उपन्यास का भावबोध पतिपरायण महिला की त्रासदी है, तो'ठीकरे की मँगनी' एक ऐसी स्त्री का जीवन संघर्ष है, जो अपने व्यक्तिगत सुखों से ऊपर उठकर समष्टिगत हित के लिए अपना जीवन समर्पित करती है।'सात नदियाँ एक समंदर' की तैय्यबा देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती है।'जिंदा मुहावरे' में बँटवारे की त्रासदी को झेलते हुए

अपनों से दूर हो जाने का दुःख बयान करती है।'जीरो रोड' का सिद्धान्त, नासिरा शर्मा की कलम से सिरजा हुआ महत्त्वपूर्ण पात्र है।'अक्षयवट' उपन्यास की भावबोध की बात की जाये, तो युवा पीढ़ी जो बेरोजगारी, भ्रष्टाचार से ग्रस्त है उसके प्रति विद्रोह है। हिंदी के स्वातन्त्रयोत्तर उपन्यास साहित्य में विशेष रूप से चिह्नित–रेखांकित करते हुए अनेक कोणों से प्रक्षेपित किया गया है।'कुइयाँजान' में सामाजिक भावबोध की त्रासदी है। इस तरह नासिरा ने अपने भावबोध को प्रकट करने के लिए विभिन्न उपन्यासों की रचना की है।

नासिरा शर्मा जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की कथा लेखिका हैं। जहाँ आदमी और उसकी आदमियत है, वहाँ जिंदगी और उसका मर्म है। मर्म का आलेखन रचना को मार्मिक और जीवंत बनाता है। लेखन में सजगता और सतर्कता ही उसे सर्वप्रिय बनाती है।'पारिजात' जो हुसैनी ब्राह्मण और अवध की गंगा–जमुनी संस्कृति को दर्शाता इंसानी रिश्तों की महिमा का बयान करता है।

नासिरा शर्मा ने मानवीय सम्बन्धों की समय और समाज के संदर्भ में जाँच–पड़ताल की है। उन्होंने यह सब प्रस्तावित किया है कि समाज कहीं का भी हो, उसमें जीवित लोग पहले अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं और फिर बड़े इंसानी सरोकारों को बचाने के लिए लड़ते हैं। उनके कहानी संग्रहों पत्थरगली, शामी कागज और इब्ने मरियम की कहानियाँ ईरान और भारत की संस्कृति, राजनीति और जीवन को इन्हीं प्रसंगों में व्यक्त करती हैं। नासिरा शर्मा, संस्कृति के इतिहास और वर्तमान के बीच में उभरने वाले फर्क को ऐसी सजग भाषा में प्रस्तुत करती हैं कि कहानियों के अदृश्य पात्र भी पाठक को संवेदना का हिस्सा बन जाते हैं। नासिरा शर्मा ने मनुष्य की संवेदनशीलता के साथ–साथ इसमें छुपे हुए हैवान को भी पहचाना है। इस संघर्ष में 'खुदा की वापसी', 'संगसार', 'शबीना के चालीस चोर' जैसे संग्रहों की कहानियाँ अहम हैं, ये कहानियाँ बताती हैं कि इंसान से शैतान के बीच के लम्हे में मनुष्य का कायान्तरण नहीं होता, उसका मानसिक धरातल और यहाँ तक कि रुह भी बदल जाती है। नासिरा शर्मा ने मनुष्यों के चारित्रिक पतन को कई धरातलों पर परखा है, राजनैतिक शक्तियाँ सत्ता हथियाने के लिए हैवान बन जाती हैं। नासिरा शर्मा ने ऐसी कहानियाँ भी लिखी हैं जो विषयवस्तु की दृष्टि से कविता के नजदीक हैं। 'बुतखाना', 'दूसरा ताजमहल' और 'इंसानी नस्ल' संग्रहों की

कहानियाँ सूक्ष्मता से इंसान की जाँच करती हैं। उनकी कहानियों की भाषा में जादू है। उनकी हिंदी, उर्दू, अरबी–फारसी और क्षेत्रीय संस्पर्श वाली भाषा की रवानी अपनी संपूर्ण खूबसूरती से पाठक को बाँधे रखती है। भाषा की परिपक्वता, मिठास और सादगी गहरे तक मन को छूती है। उनकी खामोश निगाहों में एक भेदक शक्ति है। मगर एक तपन भी। हर गलत के प्रति, हर अन्याय के प्रति, दुनियावी रीति–रिवाजों के कट्टरपन के प्रति उनकी आँखों में विरोध की एक लौ जलती प्रतीत होती है।

नासिरा शर्मा की कहानियाँ समाज में व्याप्त धर्म, जाति, संप्रदाय, आदि की दीवारों को तोड़ती है। इन कहानियों में प्रेम का एक निर्मल संसार भी देखने को मिलता है। प्रेम का यह संसार दाम्पत्य जीवन का प्रेम भी है, जहाँ अलग–अलग धर्म के स्त्री–पुरुष, पति–पत्नी का सम्बन्ध स्वीकार करते हैं। उनकी कहानियाँ नए विषय को लेकर सामने आती है और सोचने के लिए मजबूर करती है। उन्होंने अपनी कहानियों में मुस्लिम समाज की रूढ़िगत परम्पराओं को प्रस्तुत करते हुए ज्यादा जोर मुस्लिम महिलाओं से संबंधित सवालों पर दिया है। लेखिका ने भौगोलिक सीमा का बंधन तोड़कर ईरान के क्रांतिकाल की मानवीय पीड़ा का चित्रण करते हुए अपनी लेखनी द्वारा सात समंदर पार के लोगों के दर्द को वाणी दी है। उनके कहानी लेखन का फलक देश और विदेश की असीमित परिधियों में फैला है। वे अपनी कहानियों द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन करने हेतु समाज जागृति का आह्वान करती हैं। कहानियों से कहीं–कहीं आक्रोश के स्वर भी उभरे हैं, किन्तु यह आक्रोश प्रायः मजबूरी में डूब गया है। कथोपकथन की दृष्टि से उनकी कहानियाँ सफल सिद्ध हुई हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ कथोपकथन प्रधान हैं। संवादों की सुंदर व्यंजना उनकी विशेषता रही हैं।

संवादों का सफल प्रयोग एवं पात्रानुरूप संवादों के कारण कहानियों में आकर्षकता एवं धाराप्रवाहता आ गई है। संवादों के माध्यम से उन्होंने कथा का विकास किया है। नासिरा शर्मा की अपनी एक अलग स्वाभाविक और सहज हिंदी है। फारसी और अरबी शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। अतः उनकी कहानियों की भाषा जिसमें उर्दू–अरबी–फारसी की मिठास है। उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरे और कहावतों के साथ–साथ उपमान और बिंबों का बहुलता से

प्रयोग किया है। शैली पर भी उनका विशेष अधिकार रहा है। कहानियों में व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक और पात्रात्मक शैलियों के साथ ही प्रतीकात्मक शैली का भी प्रयोग कुशलता के साथ किया है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की विषयवस्तु पर चर्चा करते हुए हमें कुछ निष्कर्ष भी प्राप्त हुए। इन विषयों में मात्र जीवन की समस्याएँ नहीं, अपितु देश की विभिन्न समस्याएँ चित्रित की गई हैं। कई बार ऐसा जान पड़ता है कि नासिरा शर्मा ने मानो कोई सर्वेक्षण किया है और तत्पश्चात् उसका विवेचन किया है। कई बार तो वे उस जगह का जहाँ कथा आश्रय लेती है, का इतिहास–भूगोल बनाती हैं। इस प्रकार कथा सिर्फ कथा न रहकर कई जानकारियों का केन्द्र बन जाती है। नासिरा शर्मा की कहानियाँ और उपन्यास दोनों का शिल्पगत विश्लेषण अलग–अलग किया गया है। विषयानुसार इनकी शैली में विविधताएँ हैं। नासिरा की ये रचनाएँ किसी उद्देश्य को साथ लेकर चलती हैं। अतः समाज को संदेश देने का कार्य भी करती हैं।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य की शैली मुख्यतः वर्णनात्मक रही है, पर कभी–कभी यह आत्मकथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक भी बन गई है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में सामाजिक समस्याओं को भी उठाया है तथा पारिवारिक समस्याएँ, स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की समस्याएँ भी नजर आती हैं। इनके कथा–साहित्य में स्त्रियाँ आत्मनिर्भर भी हैं और कहीं–कहीं पुरुष सत्तात्मक समाज के द्वारा पीड़ित भी हैं। नासिरा शर्मा का सामाजिक विषयों पर लिखा गया साहित्य उन्हें परंपरावादी जकड़न से बाहर निकालकर समाज को नई दिशा दिखाता है।

नासिरा शर्मा स्वयं नारी होने के कारण अपने कथा–साहित्य के नारी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत कर पाने में अधिक सफल रही हैं। वस्तुतः नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य के नारी पात्र विभिन्न भारतीय परिवेश एवं मुस्लिम देशों के परिवेश के सामाजिक सोच और मानसिकता का कुशलतापूर्वक प्रतिनिधित्व करती है।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का इस प्रकार मार्मिक चित्रण हुआ है कि पाठक उनकी कथाओं में स्वयं की झलक देखता है। नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिरा ने मुस्लिम समाज में

उत्पन्न नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की और जीवन की तमाम जटिलताओं के वर्णन ने उनकी लेखनी की भाषा का संस्कार दिया। उनकी कुछ कहानियों की पृष्ठभूमि में स्त्री की न केवल छाया रही बल्कि मुख्यतः मुस्लिम नारी एक प्रतिबिंब के रूप में नजर आती है। उपन्यासों में घटनाओं को साथ लेकर, किरदारों के भीतरी और बाहरी जीवन को दर्शाती हुई जीवन के निहित पहलुओं को उजागर करती है। नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य का दायरा इतना विस्तृत, असीम और इतना अधिक आयाम वाला है कि साहित्य की कोई विधा इनसे अछूती नहीं रह सकती।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय'***नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन***' है। यह विषय मूल्यों से जुड़ा है और मूल्य, मानव–जीवन के महत्वपूर्ण आदर्श, सिद्धान्त या मान्यताएँ हैं, जिन्हें पाने के लिए व्यक्ति और समाज दोनों ही सचेष्ट होते हैं और जिनसे व्यक्ति और समाज का जीवन कल्याणकारी और सुखी होता है। संघर्ष एक सामाजिक प्रक्रिया है जो सभी समाजों में पायी जाती है। संघर्ष प्रतिकूलता के पश्चात प्रारंभ होता है। स्वार्थपरता बढ़ने से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को हानि पहुँचाने की कोशिश करता है इसके विरोध में दूसरा व्यक्ति अपनी रक्षा करने का प्रयत्न करता है जिससे मनोवैज्ञानिक स्तर पर संघर्ष की रूपरेखा बनती है तथा अवसर आने पर मनोवैज्ञानिक संघर्ष होने लगता है। नासिरा जी के कथा–साहित्य में मूल्यों के विभिन्न आयामों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आयामों को प्रस्तुत किया गया है। ये सभी हमारे जीवनमूल्य कहलाते हैं। जिनके लिए हम जीवित रहते हैं एवं बड़े से बड़ा त्याग कर सकते हैं। साहित्य में मूल्य एवं मानवतावादी स्वर से जुड़े तथ्यों को शोध का स्तर प्रदान करना ही मुख्य लक्ष्य है। मानव जीवन कैसा है और कैसा होना चाहिए ? अर्थात् सद्–असद् का ज्ञान और विवेक ही जीवन–मूल्यों का सृष्टा है। समाज अपने व्यक्तियों से जो अपेक्षाएँ रखता है वे सभी जीवन–मूल्यों के भीतर समाविष्ट होते हैं क्योंकि ये आदर्शात्मक होते हैं। व्यक्ति जब इनकी ओर अग्रसर होकर व्यवहार आरंभ करता है तभी समाज में एक व्यवस्था स्थापित होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होता है और मूल्य व्यक्ति की सोच का परिणाम होने के कारण उसका भी सामाजिक अस्तित्व होता है इस प्रकार

व्यक्ति और समाज की संयुक्त प्रतिबद्धता के कारण व्यक्ति अपने जीवन में कुछ ऐसे तत्वों की पहचान करवाता है, जिनकी बहुसंख्यक वर्ग को आवश्यकता होती है। मूल्यों का परिचय एवं उनकी स्थापना यहीं से प्रारम्भ होती है। मानव–जीवन की गतिविधि एवं कार्य–प्रणाली को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए जिन मूल–भूत तत्वों की आवश्यकता होती है, वे ही जीवन–मूल्य कहलाते हैं। मूल्यों का सृष्टा और संवाहक व्यक्ति ही होता है। प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक संस्कृति के अपने मानदण्ड होते हैं, समाज में रहने वाला प्रत्येक प्राणी इन मानदण्डों को मानने के लिए बाध्य रहता है तांकि एक नैतिक–व्यवस्था बनी रहे। प्रारंभ में ये मूल्य व्यक्तिगत जीवन में उद्‌भूत होते हैं, कालांतर में ये सामाजिक जीवन में व्याप्त होकर व्यापक रूप ग्रहण कर लेते हैं और समाज के जीवन–मूल्य बन जाते हैं। समाज उन्हें गृहीत करके सामूहिक स्वीकृति प्रदान कर देता है, तब व्यक्ति उनके अनुसार अपने आचार–विचार को निश्चित करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार मूल्यों को हमारे आचार–विचारों का समुदायीकरण कहा जा सकता है और ये मूल्य ही आदर्श बनकर हमारे मानसिक जीवन को प्रेरित करते हैं।

इस विषय से संबंधित अनेक शोध कार्य हो चुके हैं। आधुनिक काल में अब तक बहुत से विद्वानों ने शोध कार्य किया है।

- 'नासिरा शर्मा का रचना संसार': रजनी कृष्णन (2007)
- 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिाल्प': डॉ. जाहिदा जंबीं (2007)
- 'नासिरा शर्मा' : व्यक्तित्व एंव कृतित्व': डॉ विजय कुमार राउत (2010)
- 'नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन': डॉ फिरोज अहमद खान (2010)
- 'नासिरा शर्मा शब्द व सम्वेदना की मनोभूमि' : ललित शुक्ल (2010)
- 'अक्षयवट उपन्यास का सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक' : डॉ. अर्चना मिश्रा, अंक वैज्ञानिक अध्ययन (2010)
- 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध': डॉ शेख मुहम्मद शाकिर (2011)
- 'युगचिंतन के परिप्रेक्ष्य में नासिरा शर्मा का साहित्य': डॉ.अर्चना मिश्रा (2011)

- 'जीरो रोड़ एक अध्ययन':सं.डॉ.एम फिरोजखान (2011)
- 'कुंइयाँजान':एक मुल्यांकन': सं. अफीरोज अहमद (2011)
- 'नासिरा शर्मा के साहित्य में'नारी स्वतंत्रता': डॉ0काला (2012)
- 'नासिरा शर्मा के साहित्य में स्त्री विमर्श': अमरीश सिन्हा (2013)
- 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प': अमरीश सिन्हा (2014)

'कॉमी आवाज़' उर्दू के समाचार पत्र में नासिरा जी के विरोध में लेखकों के आर्टीकल और खत प्रकाशित हुए। ईरानी क्रान्ति पर लेखकों, कवियों एवं राजनीतिज्ञों के साथ हुई इनकी चर्चा'सारिका' और'पुनश्च' पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में चयन किया गया यह विषय (जीवन मूल्य संघर्ष) अछूता और मौलिक विषय है।

उद्देश्य–

- इस शोध में व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया गया है तांकि व्यक्ति का बौद्विक और सामाजिक विकास हो सके। व्यक्ति का सही मार्ग दर्शन करना ही शोध का मुख्य लक्ष्य है।
- समाज हित में बेहतर रचनात्मक कार्य करने की इच्छा और यश, धन, सम्मान और ज्ञान की प्राप्ति।
- देश में बढ़ रही पलायन वृति को दिखाते हुए उसके कारण होने वाली समस्याओं को उजागर करना।
- प्राचीन संस्कृति के स्वरुप की व्याख्या करते हुए वर्तमान में हो रहे संस्कृति संक्रमण को दिखाना।
- समाज में हो रही धार्मिक हिंसा के प्रति लोगों को जागरुक करना और इसके कारणों से लोगों को अवगत करवाना।
- राजनैतिक उद्देश्यों पर चर्चा करते हुए आज के राजनैतिक रूप की व्याख्या करना।
- जीवन मूल्यों के हो रहे पतन की चर्चा करना और इसकी महत्ता को स्पष्ट करना तांकि हर व्यक्ति इन मूल्यों का सही प्रयोग कर देश को प्रगति पथ पर

लाने में सहायक हो सके।

- सामाजिक जड़ता को सामने लाने का प्रयास किया गया है। नारी शिक्षा को बढ़ावा देना और लोक कल्याण की भावना विकसित करना इस शोध का मुख्य लक्ष्य है।
- आधुनिक टेक्नोलॉजी के कारण निरंतर बढ़ रही पानी की समस्या के प्रति जनता को सचेत करना तांकि व्यक्ति इसके समाधान के लिए गंभीरता से सोचकर आवश्यक कदम उठाए।

आशा है कि इस शोध से आने वाली पीढ़ी और यह समाज लाभान्वित होंगे। पाठक जब ऊपर दी गई समस्याओं पर गहराई से सोच–विचार करेगा तो निःसंदेह वह इनके समाधान और देश के विकास में अपना योगदान देगा। जिस देश का हर व्यक्ति जागरुक होगा उस देश को उन्नति करने से कोई नहीं रोक सकता। अपने देश का विकास ही इस शोध का मुख्य लक्ष्य है।

भावी शोध संकेत

परिवर्तन संसार का नियम है। जैसे–जैसे समाज की गतिविधियों में परिवर्तन आता है वैसे–वैसे ही जीवन–मूल्यों में भी परिवर्तन आता रहता है। जिसे स्वीकार करना हर व्यक्ति के लिए सरल नहीं होता। इसी कारणवश संघर्ष होता है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध का विषय'***नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन*** है। भविष्यकाल में निम्नलिखित शीर्षकों पर शोध कार्य संभव हो सकता है।

- नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श।
- नासिरा शर्मा के उपन्यास एवं कहानियों में सांस्कृतिक संक्रमण।
- नासिरा शर्मा के साहित्य में राजनीति का विध्वंसक रूप।
- नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी की कर्तव्य–परायणता।
- नासिरा शर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना।
- नासिरा शर्मा के साहित्य में नयी और पुरानी पीढ़ी में संघर्ष।

शोध प्रद्धत्ति

प्रस्तुत शोध कार्य *'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन'* का सर्वेक्षण और मूल्यांकन करने के लिए अन्य साहित्यकारों की रचनाओं और आलोचकों द्वारा दिये गये विचारों और किए गए चिंतन को समीक्षापूर्ण और मूल धारणाओं को ग्रहण किया गया है तांकि अपने शोध कार्य को सम्पूर्णता प्रदान की जा सके। शोध कार्य में भिन्न भिन्न विधियों जैसे तुलनात्मक विधि, सामाजिक समानता विधि और अंतर अनुशासनी विधि को आधार बनाया गया है। शोध कार्य को और सार्थक एवं आकर्षक बनाने के लिये भिन्न भिन्न विद्या स्थलों, पत्रिकाओं, इंटरनेट के साधनों आदि का प्रयोग किया गया है।

विषय–विभाजन :

प्रस्तुत शोध–कार्य को षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय 'नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व में उनके जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन किया गया है। जिसमें नासिरा शर्मा जी का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, दांपत्य जीवन, नौकरी, आदि पर प्रकाश डाला गया। तो कृतित्व के अंतर्गत नासिरा शर्मा जी के कुल 'बारह' कहानी संग्रह के नाम बताकर उनके भीतर समाविष्ट कहानियों के शीर्षक के माध्यम से उनका परिचय दिया गया है। नासिरा शर्मा के द्वारा प्रकाशित 'ग्यारह' उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं। इसके अतिरिक्त नासिरा शर्मा जी ने रिपोर्ताज, नाटक, बालकथाएँ, लेख, आलोचना आदि गद्य विधाओं की रचना की हैं और टीव्ही सीरियल के लिए कथा, पटकथा, संवाद लेखन का कार्य किया है। पत्रिकाओं के संपादन का भी कार्य किया हैं। जिसका शीर्षकों के माध्यम से परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय 'नासिरा शर्मा के उपन्यासों में उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

तृतीय अध्याय नासिरा शर्मा की कहानियों में उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं। धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं में सांप्रदायिकता, रुढ़ि–परंपरा, अंधवि"वास आदि उपमुद्दों को नासिरा जी के कहानियों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया हैं।

चतुर्थ अध्याय में नासिरा शर्मा के अन्य विधाओं में उद्घाटित विविध पक्ष से सम्बन्धित नारी समस्या, सामाजिकता, सांस्कृतिकता तथा धार्मिकता के माध्यम से स्पष्ट किया गया हैं।

पंचम अध्याय 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य की भाषा–शैली' में भाषा के महत्व को बताकर कथा साहित्य में प्रयुक्त शब्द भंडार, लोकोक्तियाँ, मुहावरों, कहावतों, उपमान, विशेषण, गालियाँ, काव्यात्मक भाषा आदि पर प्रकाश डालकर वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक, फ्लैश बैक, मनोविश्लेषनात्मक, पत्रात्मक, व्यंग्यात्मक, आदि शैलियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

षष्ठ अध्याय 'नासिरा शर्मा का हिन्दी साहित्य में प्रदेय एवं साक्षात्कार से लेखिका के साहित्य में योगदान, स्वरूप एवं महत्व को बताते हुये विविध भूमिकाओं का वर्णन किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत उनकी उपलब्धियों एवं योगदान का वर्णन भी किया गया है।

अंत में 'उपसंहार' में सभी अध्यायों का सारांश प्रस्तुत किया गया है और पुरे अनुसंधान के दौरान आए अनुभव के आधार पर वर्तमान समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध का निचोड़ प्रस्तुत करते हुये शोध की उपादेयता को स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध को पूर्ण रूप प्रदान करने के लिये अनुक्रमणिका के अन्तर्गत

शोधकर्ता द्वारा सहायक ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ और पत्र–पत्रिकाओं का वर्णन किया है। जिनका उपयोग शोधकर्ता ने अपने शोध प्रबन्ध में सहायक के रूप में किया गया है।

निष्कर्ष–

नासिरा शर्मा ने अपने कथा–साहित्य में आर्थिक समस्याओं को उठाते हुए भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी, कुपोषण जैसी समस्याओं से निपटना अत्यन्त आवश्यक बताया है। युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया करवाना देश के नेताओं का कर्तव्य है। उन्होंने राजनीति और धर्म के पाटों में पिसती इंसानी जिंदगियों के चित्र उकेरे हैं। तीज–त्यौहारों के बारे में लिखते हुए नासिरा शर्मा धार्मिक संस्कारों और रीति–रिवाजों का विस्तृत वर्णन करती हैं। विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखे गये कथा–साहित्य के द्वारा वहाँ की सभ्यता और संस्कृति का वर्णन कुशलता से करती हैं। विदेशी तौर–तरीके और रीति–रिवाजों से परिचित कराती हैं। विदेशी परिवारों के साथ–साथ हिंदू–मुस्लिम परिवारों का वर्णन करती है। ग्रामीण और शहरी जीवन, संयुक्त और सकल परिवारों की अपनी–अपनी अलग समस्याएँ हैं, जिसका वे कुशलता से चित्रण करती हैं। लेखिका ने समस्याओं का चित्रण करते समय किसी एक वर्ग या समाज की समस्याओं को स्थान न देकर वर्ग भेद की दूरी मिटाने का प्रयास करते हुए'सर्वधर्म समभाव' पर विश्वास प्रकट किया है। हर वर्ग, प्रान्त, देश की समस्या, अलग–अलग होने के कारण उनका समाधान भी अलग तरह से किया है। कई बार सिर्फ समस्या का जिक्र करते हुए समाधान ढूँढ़ने की जिम्मेदारी उन्होंने पाठकों पर छोड़ दी है। प्रतिनिधि रूप में उनके साहित्य में गाँव की समस्या से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समस्या तक का उल्लेख मिलता है और इसमें काफी विविधता दिखाई देती है। इस प्रकार जाति, धर्म, प्रान्त, राष्ट्र इत्यादि सीमाओं से कहीं ऊपर उठकर उनका साहित्य पर विश्वास है और विश्व एकता की मिसाल कायम करता है। आज की समाज व्यवस्था में इस प्रकार की विचारधारा का साहित्यिक होना सचमुच गर्व की बात है।

नासिरा शर्मा ने अनुभूतिजन्य साहित्य का सृजन किया है। उसका साहित्य आदर्श विचारों का संवाहक प्रतीत होता है। उन्होंने साहित्य में परंपरा और आधुनिकता का समन्वय स्थापित करने का अनूठा प्रयास किया है। नासिरा शर्मा

कथा साहित्य में निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के जनजीवन का सशक्त चित्रण मिलता है। उनके साहित्य के पात्र सदैव संघर्षरत दिखाई देते हैं। उनके समग्र साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी जीवन का चित्रण एवं समस्याओं का उद्घाटन रहा है। नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य को तत्वों की कसौटी पर परखने पर यह स्पष्ट होता है कि इनमें संरचना, कलात्मकता, मौलिकता, ताजगी, आदि का अनूठा संगम हुआ है।